


---

# Pakshikritam Shrirama Navaka stotram

——  
पक्षीकृतं श्रीरामनवकस्तोत्रम्

——  
Document Information



---

Text title : Shrirama Navakastotram

File name : rAmanavakastotram.itx

Category : raama, nava

Location : doc\_raama

Transliterated by : Vishwesh GM

Proofread by : Vishwesh GM, NA

Description/comments : from Anandaramayana

Latest update : September 15, 2022

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2022

*sanskritdocuments.org*

---



पक्षीकृतं श्रीरामनवकस्तोत्रम्



मङ्गलम्-

रामयन्द्रं जगत्पूज्यं रघुवंशविभूषणम् ।

लोकानन्दप्रदातारं तमीशं प्रणामाम्यहम् ॥

जयतुराघवो जानकीयुतो जयऽभिलेश्वर राजेश्वरः ।

दशरथात्मजो लक्ष्मणान्नजो जयतु नापतिं ताटिकान्तकः ॥ १ ॥

जयतु कौशिकस्याध्वरङ्गतो जयतु राक्षसां मारकोमडान् ।

जयतु गौतमऽडल्यया स्तुतो जयतु जानकीतात मानितः ॥ २ ॥

जयतु नः पतिश्चापभङ्गो जनकजावरोन्मुक्त मालया ।

नृपसभाङ्गणो कौशिकानुगः परम शोभितश्चातिर्षित ॥ ३ ॥

जयतु भूमिजाङ्घ्र्योस्तदा मुदा निज करोत्पलेस्थाप्यराघवः ।

कमल उस्तके नाकरोन्नति स रघुनन्दनो पातु नः सुभम् ॥ ४ ॥

जयतु भूमिजालिङ्गितो मडान् जनमनोहर यातिशोभनः ।

परशुरामदं धृत्य वै धनुर्निजपितुर्तदाऽदर्शयन् बलम् ॥ ५ ॥

जयतु कैकयी प्रेरितोवनं जयतु सीतया भोग कृष्विरम् ।

जयतु पर्वतेवास कृष्विरं जयतु योत्रिणा पूजितो वने ॥ ६ ॥

जयतु ते विराघस्य घातकृतं जयतु दूषणादि प्रमर्दनः ।

जयतु यो मृगं मोचयन् भवात्जयतु यः कबन्धक्षाणाञ्जडौ ॥ ७ ॥

जयतु वालिडा सेतुकारको जयतुरावाणार्दिक मर्दकः ।

जयतु स्वं पदं प्रापसीतया जयतु मङ्गलं स्नानं कृन्मुदा ॥ ८ ॥

जयतु वाक्यतो भूसुरस्य यः सकल भूतल पर्यटन् शिरम् ।

जयतु याग कुल्लोक शिक्षया जयतु जानकी-रञ्जयन् स्थितः ॥ ९ ॥


रघुवरस्य यत्पक्षिभिःकृतं नवकमुत्तमं यः पठिष्यति ।


तपन निर्गमे भक्ति तत्परो निजमनार्थितं सङ्गमिष्यति ॥ १० ॥

एति आनन्दशमायणान्तर्गतं रामनवकं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Vishwesh GM

---

——  
*Pakshikritam Shrirama Navaka stotram*  
pdf was typeset on September 16, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

